राजदीप सरदेसाई का कॉलम CJP प्रेशर ग्रुप बनेगी या राजनीति में उतरेगी?

विषय सूची (Table of Contents):

>> राजदीप सरदेसाई का कॉलम सीजेपी के उभार से लेकर राजनीतिक भविष्य तक के मुख्य बिंदु...
>> अभिजीत दपिके और सीजेपी (कॉकरोच जनता पार्टी) का अप्रत्याशित उभार...
>> एक ट्वीट से शुरू हुए देशव्यापी आंदोलन का राजनीतिक असर...
>> प्रेशर-ग्रुप बने रहना या चुनावी राजनीति में उतरना मुख्य दुविधा...
>> आम आदमी पार्टी (आप) के शुरुआती दौर से सीजेपी की तुलना...
>> नैतिक ताकत को राजनीतिक और चुनावी सफलता में बदलने की चुनौती...
>> सीजेपी का मुख्य समर्थक वर्ग और युवाओं का असंतोष...
>> पारंपरिक दलगत राजनीति से ऊपर उठकर आंदोलन की साख बचाना...
>> महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर...

राजदीप सरदेसाई का कॉलम: सीजेपी के उभार से लेकर राजनीतिक भविष

वरिष्ठ पत्रकार राजदीप सरदेसाई ने अपने हालिया कॉलम में भारतीय राजनीति के एक नए और अप्रत्याशित पहलू पर रोशनी डाली है। उन्होंने संभाजीनगर के 30 वर्षीय अभिजीत दपिके और उनके द्वारा शुरू किए गए कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) के आंदोलन का गहराई से विश्लेषण किया है। यह लेख इस बात पर केंद्रित है कि कैसे एक साधारण सा ट्वीट देशव्यापी आंदोलन बन गया और अब इसके सामने एक बड़ा राजनीतिक सवाल खड़ा हो गया है।

अभिजीत दपिके और सीजेपी (कॉकरोच जनता पार्टी) का अप्रत्याशित उ

भारतीय राजनीति में कभी-कभी ऐसी घटनाएं घट जाती हैं, जिनकी कल्पना करना भी मुश्किल होता है। अभिजीत दपिके का अचानक सुर्खियों में आना इसी का एक जीवंत उदाहरण है। कुछ समय पहले तक उन्हें या उनकी सीजेपी को कोई नहीं जानता था, लेकिन आज स्थिति यह है कि बड़े-बड़े राजनेता और मीडिया कर्मी उनके साधारण से घर का रुख कर रहे हैं। इस अप्रत्याशित उभार ने यह साबित कर दिया है कि जमीनी हताशा और असंतोष किस प्रकार रातों-रात एक बड़ी राजनीतिक हकीकत में बदल सकते हैं।

एक ट्वीट से शुरू हुए देशव्यापी आंदोलन का राजनीतिक असर

इस पूरे घटनाक्रम की शुरुआत 16 मई को हुए एक सोशल मीडिया ट्वीट से हुई थी, जिसमें कॉकरोचों से एकजुट होने की अपील की गई थी। किसी ने नहीं सोचा था कि यह ऑनलाइन आह्वान एक ताकतवर केंद्रीय मंत्री के इस्तीफे का कारण बन जाएगा। यह आंदोलन इस बात का प्रमाण है कि डिजिटल युग में युवाओं का आक्रोश कितनी जल्दी एक संगठित राजनीतिक दबाव में परिवर्तित हो सकता है, जिससे स्थापित राजनीतिक दलों की चूलें हिल जाती हैं।

प्रेशर-ग्रुप बने रहना या चुनावी राजनीति में उतरना: मुख्य दुविधा

सीजेपी की तात्कालिक सफलता के बाद अब उसके सामने सबसे बड़ी वैचारिक और रणनीतिक चुनौती यह तय करने की है कि उसे आगे क्या करना चाहिए। क्या इस संगठन को केवल एक दबाव समूह (Pressure Group) के रूप में काम करना चाहिए जो सरकार की जवाबदेही तय करे, या फिर इसे सीधे चुनावी मैदान में उतरकर राजनीतिक दल का रूप लेना चाहिए? इस उलझन का समाधान ही संगठन का भविष्य तय करेगा।

आम आदमी पार्टी (आप) के शुरुआती दौर से सीजेपी की तुलना

इस स्थिति की तुलना साल 2011 के उस दौर से की जा सकती है जब अरविंद केजरीवाल ने कहा था कि उनकी राजनीति में आने की कोई योजना नहीं है, लेकिन दो साल बाद वे दिल्ली के मुख्यमंत्री बन गए। अभिजीत दिपके ने आप के साथ काम किया है, इसलिए वे इस बात को भली-भांति समझते हैं कि प्रतिरोध आंदोलन को राजनीतिक ताकत में कैसे बदला जाता है और इस प्रक्रिया में किन व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

नैतिक ताकत को राजनीतिक और चुनावी सफलता में बदलने की चुनौती

किसी भी आंदोलन की सबसे बड़ी पूंजी उसकी नैतिक शुचिता और विश्वसनीयता होती है। जब कोई संगठन चुनावी राजनीति के अखाड़े में उतरता है, तो उसे गठबंधन, समझौते और संगठनात्मक मजबूरियों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में अपनी मूल नैतिक ताकत और साख को बचाए रखते हुए चुनावी सफलता हासिल करना बेहद टेढ़ी खीर साबित होता है, जैसा कि इतिहास के कई उदाहरणों से स्पष्ट है।

सीजेपी का मुख्य समर्थक वर्ग और युवाओं का असंतोष

किसी भी नए राजनीतिक स्टार्टअप के सफल होने के लिए एक स्पष्ट सामाजिक आधार और सही टाइमिंग का होना अनिवार्य है। सीजेपी के संदर्भ में यह देखना महत्वपूर्ण है कि इसका मुख्य आधार कौन है - क्या यह बार-बार होने वाले पेपर लीक से परेशान

जेन-जी है, नौकरी तलाश रहे बेरोजगार स्नातक हैं, या फिर विकास यात्रा से खुद को कटा हुआ महसूस करने वाला मिडिल-मध्यम वर्ग है? जब तक इन सवालों के पुख्ता जवाब नहीं मिलते, चुनावी सफलता संदिग्ध रहती है।

इस दिशा में आर्थिक स्थिरता और स्वरोजगार के अवसरों के लिए सरकारी मदद को समझना भी जरूरी है। युवा अक्सर वित्तीय सहायता के लिएपीएम मुद्रा लोन योजनाजैसे विकल्पों की तलाश करते हैं। इसके अलावा, बड़े पैमाने पर बिजिनेस शुरू करने के लिएबिना गारंटी बिजिनेस लोन योजनाओंकी जानकारी युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करती है। साथ ही, क्षेत्रीय विकास और आवास योजनाओं का डेटा देखने के लिएयूपी का नंबर-वन आवास योजना रिकॉर्डजैसे उदाहरण प्रशासनिक सफलता को दर्शाते हैं।

पारंपरिक दलगत राजनीति से ऊपर उठकर आंदोलन की साख बचाना

सीजेपी की सबसे बड़ी ताकत यही है कि वह पारंपरिक अर्थों में कोई राजनीतिक दल नहीं है। जनता के दिलों में इस आंदोलन ने इसलिए जगह बनाई क्योंकि यह व्यवस्था के खिलाफ आम युवाओं की बेबाक आवाज बना। जैसे ही कोई समूह चुनावी राजनीति का हिस्सा बनता है, वह धीरे-धीरे उसी स्थापित व्यवस्था का एक मोहरा बन जाता है जिसके खिलाफ उसने बगावत की थी। यही कारण है कि यह संगठन फिलहाल एक प्रेशर-ग्रुप के रूप में ही अपनी प्रासंगिकता बनाए रखना चाहता है।

महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर

यह कॉलम अभिजीत दिपके और सीजेपी (कॉकरोच जनता पार्टी) के उभार तथा उनके भविष्य में राजनीति में उतरने या प्रेशर-ग्रुप बने रहने की दुविधा पर आधारित है।

अभिजीत दिपके संभाजीनगर के 30 वर्षीय युवा हैं, जिनका एक ट्वीट देशव्यापी आंदोलन में बदल गया और जिसके परिणामस्वरूप एक केंद्रीय मंत्री को इस्तीफा देना पड़ा।

सीजेपी का पूरा नाम कॉकरोच जनता पार्टी (Cockroach Janata Party) है।

नहीं, अभिजीत दिपके का कहना है कि उन्होंने राजनीतिक दल बनाने के बारे में नहीं सोचा है और वे लोकतंत्र में जवाबदेही मांगने वाला आंदोलन बने रहना चाहते हैं।

इसकी तुलना आम आदमी पार्टी (आप) के शुरुआती दौर और 2011 के भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन से की गई है।

प्रतिस्पर्धी राजनीति की कठोर दुनिया में प्रवेश करने पर समझौतों और संगठनात्मक मजबूरियों के बीच अपनी नैतिक शुचिता बचाए रखना सबसे बड़ी चुनौती है।

पेपर लीक से परेशान जेन-जी, बेरोजगार स्नातक और विकास यात्रा से हाशिए पर महसूस कर रहा मिडिल-मध्यम वर्ग इसका संभावित समर्थक आधार है।

इसकी सबसे बड़ी ताकत यह है कि यह कोई पारंपरिक राजनीतिक दल नहीं है, जिससे जनता के बीच इसकी नैतिक विश्वसनीयता बहुत

अधिक है।

हाँ, एक दबाव समूह के रूप में यह बिना किसी राजनीतिक समझौते के सत्ता और व्यवस्था से बाहर रहकर सीधे सवाल पूछ सकता है और अपनी साख सुरक्षित रख सकता है।

युवा स्वरोजगार के लिए पीएम मुद्रा लोन योजना और बिना गारंटी बिजिनेस लोन जैसी सरकारी योजनाएं वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं।

सार यह है कि जन-आंदोलनों को अपनी नैतिक विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए चुनावी दल बनने की बजाय एक प्रभावी दबाव समूह के रूप में कार्य करना अधिक सुरक्षित और उपयोगी लग सकता है।